उपदेशप्रासाद भाग-१

फोल्डर नं.	००२६०२
ग्रन्थ	उपदेश प्रासाद भाग-२
लेखक	विजयलक्ष्मीसूरिजी
प्रकाशक	सुरेन्द्रसूरीश्वरजी जैन तत्त्वज्ञानशाला – अहमदाबाद
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	१९८८
पृष्ठ	४२४

मुख्य टाईटल

आचार्य श्री सुरेन्द्रसूरीश्वरજી જૈન તત્વ જ્ઞાનશાળા

જરા બે મિનિટ

श्री उपदेशप्रासाद ग्रंथ प्रकाशनमां सुकृत सहभागीनी यादी

किञ्चित प्रास्ताविकम

सोनानो सूर्योदय

ट्रस्ट्रीओनुं वक्तव्य

स्व. योगनिष्ठ आचार्य श्रीमद बुद्धिसागरજી મહારાજની ८० वर्ष पहेलां लखायेली भविष्यवाणी

प्रथमावृतिगत प्रस्तावना

श्रीअनुपदेशप्रासादप्रथमविभागस्य विषयानुक्रम

प्रथमस्तम्भ

मंगलम, चतुस्त्रिंशदतिशया ---------- १

सम्यकत्वम – महाबलराजकुमार ---------- ७

सम्यकत्वप्रापणे हेतुध्ययम – कृषीवल ---------- ९

सम्यकत्वभेदत्रयम – श्रेणिकराज ---------- ११

सम्यकत्वस्य सप्तषष्टौ भेदेषु परमार्थसंस्तवनाम्नी प्रथमश्रद्धा – अभयकुमार ----------१३

मुनिपर्युपास्तिनाम्नी द्वितीयश्रद्धा – पुष्पचूला साध्वी ---------- १७

व्यापन्नदर्शनत्यागनाम्नी तृतीयश्रद्धा – जमालि (प्रथमनिह्नव) ---------- १९

पाखंडिवर्जननाम्नी चतुर्थश्रद्धा – गौतमस्वामी ----------२१

सम्यकत्वलिङ्गत्रयमध्ये शुश्रूषानामादिमं लिङ्गम – सुदर्शनश्रेष्ठर्जुनमालिकौ ---------- २४

धर्मरागनाम द्वितीयं लिङ्गम – चिलातीपुत्र ---------- २६

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वैयावृत्यनाम तृतीय लिङ्गम – नन्दिषेण ---------- २८
दशधा विनय – भुवनतिलक ---------- २९
विनयप्रशंसा – श्रेणिकराज ----------३१
अविनयफलम – कूलवालकमुनि ---------- ३३
सम्यकत्वस्य शुद्धित्रितये मन शुद्धि – जयसेना ---------- ३५
द्वितीयस्तम्भ
मनः शुद्धि – आनन्दश्रावक ---------- ३८
वचनशुद्धि – कालिकाचार्य ---------- ३९
कायशुद्धि – वज्रकर्ण ---------- ४१
सम्यकत्वस्य दूपणपञ्चके प्रथमं शङ्कादूषण – वालद्रयं, निह्नवद्वितीयस्तिष्यगुप्त,
निह्नवसंख्या च ---------- ४२
द्वितीयमाकांक्षादूपणं – जितशत्रुमंत्रिणौ, सर्वदेवभक्त श्रीधरश्च ---------- ४४
तृतीयं विचिकित्सादूषणं – दुर्गन्धाराज्ञी ---------- ४५
चतुर्थ मिथ्यात्विप्रशंसादूषणं – सुमतिनागिलौ ---------- ४७
पंचम मिथ्यादृष्टिसंस्तवदूषणं – धनपालकवि ---------- ४८
प्रभावकाष्टके प्रथम प्रवचनप्रभावक – वज्रस्वामी ---------- ५२
द्वितीयो धर्मकथकप्रभावक – सर्वज्ञसूरि ---------- ५४
उपदेशलब्धि – नन्दिषेण---------- ५६
तृतीयो वादी प्रभावक – मल्लवादिसूरि ---------- ५७
तृतीयो वादी प्रभावक – देवसूरि ---------- ५९
वादयोग्यपुरुषलक्षणं – वृद्धवादिसूरिसिद्धसेनदिवाकरौ ---------- ६१
चतुर्थो निमित्तप्रभावक – भद्रबाहुस्वामी ---------- ६४
तृतीयस्तम्भ
पञ्चमस्तपस्विप्रभावक – काष्ठमुनि ---------- ६६
षष्ठो विधाप्रभावक – हेमचन्द्रसूरि ---------- ६७
सप्तम सिद्धप्रभावक – पादलिप्तसूरि ---------- ६९
अष्टम कविप्रभावक – हरिभद्रसूरि ---------- ७१
द्वितीयातिशयवत्कविस्वरुपं – मानतुङ्गसूरिबप्पभट्टसूरि ---------- ७३
सम्यकत्वभूषणपञ्चके प्रथमं स्थैर्यभूषणम – सुलसाचरित्रम ---------- ७६
द्वितीयं प्रभावकभूषणम – देवपालराज ---------- ७९
तृतीयं क्रियाकुशलताभूषणम – उदायिराज ---------- ८०
चतुर्थमन्तरङ्गभक्तिभूषणम – एक नारी, जीर्णश्रेष्ठी च ---------- ८२
पञ्चमं तीर्थसेवाभूषणम – लौकिकतीर्थसेवने तुम्बिका सत्तीर्थसेवने त्रिविक्रमश्च ---------- ८३
सम्यकत्वलक्षणपञ्चके प्रथमं शमलक्षणम – कुरगडमुनि ---------- ८५
द्वितीयं संवेगलक्षणम – निर्ग्रन्थमुनि---------- ८६

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृतीयं निर्वेदलक्षणम – हरिवाहनराज ---------- ८८
चतुर्थमनुकम्पालक्षणम – चंडकौषिक राज्ञीचतुष्टयं च ---------- ९१
पञ्चममास्तिक्यलक्षणम – पन्नशेखरराज ---------- ९२
चतुर्थस्तम्भ
सम्यकत्वयतनाषट्के प्रथमं यतनाद्वयम – संग्रामसूरराज ---------- ९४
शेषं यतनाचतुष्टयम – सद्दालपुत्रश्रावक ---------- ९५
आकारषट्कमध्ये प्रथमो राजाभियोगाकार – कार्त्तिकश्रेष्ठी कोशागणिका च ---------- ९७
द्वितीयो गणाभियोगाकार – सुधर्मराज ---------- ९९
तृतीयो वृत्तिकान्ताराकार – अच्चंकारीभट्टा ---------- १०१
चतुर्थो गुरुनिग्रहाकार – सुलस, आरोग्यद्विजश्च ---------- १०३
पञ्चमो देवाभियोगाकार – प्रत्येकबुद्धनमिराजर्षि ---------- १०५
षष्ठो बलाभियोगाकार – सुदर्शनश्रेष्ठी ---------- १०८
सम्यकत्वस्य भावनाषट्कम – विक्रमराज---------- १०९
सम्यकत्वस्य स्थानषट्कमध्ये प्रथमस्थानध्यम – ईन्द्रभूति (गौतमस्वामी) ---------- १११
तृतीयचतुर्थस्थानध्यम – अग्निभूति ---------- ११४
पञ्चमषष्ठस्थानद्विकम (सप्तषष्टिभेदविवरणं संपूर्ण) – प्रभासणगणधर ---------- ११६
रोचकसम्यकत्वम – कृष्णवासुदेव ---------- ११९
कारकसम्यकत्वम – काकजंघकोकासौ ----------१२१
दीपकसम्यकत्वम – अंगारमर्दकसूरि ---------- १२६
सम्यकत्ववस्तुस्वरुपम, बुद्धेर्गुणाष्टकम च – सुबुद्धिमंत्री ---------- १२८
प्रथममणुव्रतं, अणुव्रतं ग्राहयितु साधोस्त्रसजीवहिंसानुमोदनाऽभाव – श्रेष्ठिन षट पुत्रा
कुमारपालराज जलगालनोपरि पुराणप्रमाणं च----------१३१
श्रावकस्य सपादविशोपकदया , आदिमव्रतस्यातिचारपञ्चकम – कुमारपाल, जीवदयाविषये
पुराणप्रमाणम ---------- १३४
हिंसाऽभावे विरति, हिंसाया प्रकारचतुष्टयम, स्थावरेषु जीवत्वसिद्धि – जिनदासश्रावक ---------- १३८
कुलक्रमागतापि हिंसा त्याज्या – हरिबलमात्सिक ---------- १४०
हिंसासक्तस्य फलम – मृगापुत्र ---------- १४४
हिंसासंकल्पेनापि हानि – दासीपुत्र ---------- १४५
कुलक्रमागतहिंसात्याग – कुमारपाल, कुमारपालकृपासुन्दर्योर्विवाह, भगिनीपतेरानाकराजस्य
कुमारपालेन दत्ता शिक्षा ---------- १४७
क्रोधेन हिंसावचो न वाच्यम – चन्द्रासगौ ---------- १५१
जीवदयाया विशेषपुष्टि – श्रीशान्तिनाथ, श्रीमुनिसुव्रतश्च ---------- १५२
प्रमादेनैव हिंसा लगति, त्रिधा हिंसा – अनुबन्धहिंसोपरि ब्रह्मदत्तचक्री ---------- १५४
हिंस्त्रानामपपि हिंसा न कार्या, धान्यादिबहुजीवहिंसनादेकगजजीवहनने दोष –
आर्द्रकुमारमुनि ---------- १५५

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साधुगृहस्थयोस्त्याज्यहिंसास्थानानि – कश्चित्क्षत्रिय, मात्सिकश्चौरश्च ---------- १५७
हिंसाऽहिंसयो फलम – सूरचन्द्रकुमारौ ---------- १५९
षष्ठस्तम्भ ६
मृषावादत्याग (महाऽसत्यपञ्चकम) – कूटसादयोपरि वसुराज ---------- १६१
चतुर्धाऽसत्यम – श्रीकान्तश्रेष्ठी, द्रौपधा सत्यवचनेनास्त्रस्य फलावाप्ति ---------- १६३
द्वितीयणुव्रते पञ्चातिचारा, तेषु प्रथमद्वितीयातिचारौ – मृषोपदेशाख्यप्रथमातिचारोपरि
कौशिकतापस असद्दोषाध्यारोपणोपरि ब्राह्मणीकथा, मुनेरवर्णवाददानोपरि वेगवती ---------- १६५
शेषातिचारत्रयं – पुण्यसार, सर्पद्रयं च ---------- १६७
सत्यप्रशंसा – हंसराज ---------- १६८
तृतीयाणुव्रतं – रौहिणेयश्चौर ---------- १७०
तृतीयव्रतस्य विशेषव्याख्या – कुमारपालराज ---------- १७२
तृतीयव्रतस्य पञ्चातिचारा – अन्यायोपार्जितद्रव्योपरि वंचकश्रेष्ठी ---------- १७४
तृतीयव्रतापालने हानि – लोहखुरश्चौर ---------- १७६
तृतीयव्रतप्रशंसा – लक्ष्मीपुत्र ---------- १७९
चतुर्थाणुव्रतस्वरुपं, नागिल, द्रव्यदीपभावदीपस्वरुपं ---------- १८०
चतुर्थव्रतप्रशंसा – कुमारदेवचन्द्रराजकुमारौ, तदन्तर्गतशीलवतीकथा, भावब्रह्मचर्यभावतपसो
स्वरुपं कथान्तर्गतमेव---------- १८२
चतुर्थाणुव्रते पञ्चातिचारा – रोहिणी, पुराणोक्तकथाद्रयं च---------- १८४
ब्रह्मचर्यपालने गुणा – जिनपाल ---------- १८६
चतुर्थव्रतभंगेऽन्यव्रतानामपि भंग – विजयश्रेष्ठी विजयाराज्ञी च, तदन्तर्गतं विजयश्रेष्ठिप्ररुपितं
विषयस्वरुपं ---------- १८७
स्त्रीजातिस्थानेकदोषा – भर्तुहरिराज ---------- १९०

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org